वह जीवन रहस्य

कविता कोश

*** अध्यात्म * हास्य व्यंग्य * विसंगतियाँ**

सुरेश कुमार गुप्ता (8097893453)

ईमेल : skgakoli@gmail.com

वह जीवन रहस्य

काव्य

अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,

उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य

****

सुरेश कुमार गुप्ता

362, डीएसआर सनराइज टावर्स,

चन्नासंद्रा मेन रोड, ए के गोपालन कॉलोनी,

व्हाइटफ़ील्ड, बेंगलुरु, कर्नाटक 560066

मोबाइल नंबर : 8097893453

ईमेल : skgakoli@gmail.com

भूमिका

प्रस्तुत संकलन काव्य रूप में
अध्यात्म, इतिहास, पुरातन कथा,
उद्गार, विसंगतियों या हास्य व्यंग्य
की प्रस्तुति है।

मन भटकता है ।
मन विषाद ग्रस्त हो जाता है,
जब जब मन समाज की
विसंगतियों से दो चार होता है।

जरूरी तो नही कोई क्या नाम दे
इस तुक बंदी को,
भावनाओ में वर्षो का सार
संकलित होता है।

मन कभी आध्यात्म में झुके
कभी इतिहास में झांक आये।
दूर दूर विसंगतियों में जाए।
व्यंग्य उजागर कर जाए।

कभी मन हास्य से खिलखिलाए।
बेबस है इंसान कुछ कर तो न पाए,
पर बोलने से मगर
कहां चुप रह पाए।

अनुक्रमणिका

1	अध्यात्म	वह जीवन रहस्य
2	अध्यात्म	कभी अकेले तो हो जाओ
3	अध्यात्म	कैसे धर्म में प्रवेश पाता
4	अध्यात्म	ध्यान की गहराइयो में
5	अध्यात्म	जो मन विषाद से आर्द्र हो पाता है
6	अध्यात्म	जीवन अल्हड़ नदी सा
7	अध्यात्म	संसार एक रोमांच है
8	अध्यात्म	मन का मालिक
9	अध्यात्म	सही लोगो के बीच
10	अध्यात्म	चांद मेरी आगोश मे आएगा
11	पुरातन कथा	मराठा गौरव
12	पुरातन कथा	रवांडा इतिहास खंगाल डाले
13	विसंगति	बिसात राजनीति की
14	विसंगति	विकास का समय कहां मिले
15	विसंगति	मस्जिद में क्या ढूंढने आये है
16	विसंगति	लोकतंत्र की चाह बेमानी होगी
17	विसंगति	कब तक सत्य से प्रयोग करते

18	विसंगति	दूर से विडीओ बना रहा
19	विसंगति	फिर गुरुकुल शुरू हो
20	विसंगति	चर्चा आम हुआ
21	विसंगति	बंदर यह रोटी बांट गए
22	विसंगति	काश आग फर्क कर पाती
23	विसंगति	राजनीति की गंगा में
24	विसंगति	क्या इतिहास उपेक्षित करेगा
25	विसंगति	अग्निपथ पर आ गए
26	विसंगति	रोम जलने के कगार पर आया
27	विसंगति	काश्मीर अनीति
28	व्यंग	कल्पना और बुलबुल
29	व्यंग	ये सेंचुरी तुम्हारी है
30	व्यंग	बाबा क्यों अफसोस करे
31	व्यंग	पप्पी का सन्मान करो
32	व्यंग	जादू जो चला
33	व्यंग	अदालते ख़ामोश है
34	व्यंग	बुलडोज़र का राज होगा
35	व्यथा	माफी न मांग सका
36	व्यथा	आया एक तूफान सा

37	व्यथा	चले ख्वाब लिए
38	व्यथा	जब बूतो में जान डालेंगे
39	व्यथा	उसे धर्म हरा गया
40	व्यथा	विपक्ष का गुनाह है
41	व्यथा	दुखी मन से
42	व्यथा	राह बोझिल हो जाएगी
43	व्यथा	आपका चरित्र गिरा है
44	व्यथा	अनिर्वचनीय आनंद पाते
45	व्यथा	अग्निवीरो का दर्द
46	हास्य	नाजुकता की मिसाल हो
47	हास्य	मेरा पामेरियन
48	हास्य	नोटों पर कौन छपे

1. वह जीवन रहस्य

कैसे जबाव देता उन चरणों मे स्वर्ग देखता हूँ
क्या बोला कमजोर हूं ना संस्कृति से बंधा हूँ

बोलते बड़े हो गए मतलब सीमा बाहर हो रहे
सीमा सागर की है पार करे जलजला होता है

कॉम्प्यूटर युग मे हथेलियों में विश्व का ज्ञान है
गूगल का किताबी ज्ञान उससे न जीत पायेगा

गीता क्या समझ लोगे तुम गूगल के ज्ञान से
बैठो अनपढ़ के करीब मिनटों में समझा देगा

छोटा मैं पढ़ता अनपढ़ बुजुर्ग गलती बताता
अवाक सोचता वो कैसे ये किताब जानते है

जिसे विकास कहते संस्कारो से भटकाएगा
जीवन का सुख किताबो से न मिल पायेगा

जिसने उतार चढ़ाव या ज्यादा बसंत देखे है
वह जीवन रहस्य बुजुर्ग संत संसर्ग बताएगा

ढूंढ लेना स्वर्ग कदमो में जिसे नकारा जाना है
भौतिक सुख की परिकाष्ठा उन चरणों मे बसे

****

2. कभी अकेले तो हो जाओ

कभी अपने से परिचय से बढ़ाओ
कभी गुनगुनाओ कभी खिलखिलाओ
कभी अपने भी तो हो जाओ
कभी अकेले हो जाओ

बहुत जी लिए जरूरतों के लिए
कभी अपने लिए भी जी जाओ
मजा कहां मंजिल पाने में
मंजिल की राह में दिए जलाते जाओ

कभी अकेले हो जाओ
रोजी रोटी रही कभी घर परिवार रहा
जीते रहे औरो के लिए
जिये पेट भरने के लिए

कभी जीने के लिए पेट भर जाओ
कभी अकेले हो जाओ
सूरज उगेगा गहन अंधकार के बाद
रोशनी आएगी सुरंग खतम होने के बाद

कदम बढ़ाते जाओ
कभी रोक लो कदमो को
कभी अकेले हो जाओ
खो जाओ ध्यान की गहराइयों में

डुब जाओ अंधेरे कमरे की अंधेरी दुनिया मे
करो इंतजार उगेगा मन का सूरज
पा जाओगे वो चिर शांति
जिसे ढूंढ़ने में भटके दिन रात

नीरव निविड अंधकार के बीच
रोशन होगा एक सूरज कूल कूल
मिट जाएगा का जीवन का अंधकार
कभी अकेले हो जाओ जाने को उस पार

****

3. कैसे धर्म में प्रवेश पाता

कहते हिंदू धर्म संकीर्ण रहा फैल नही पाया
आज का हिन्दू क्या सुचिता समझ ही पाया
हिन्दू धर्म की पात्रता उच्च विद्वता सदा रही
शूद्रों तक को इस धर्म ने कहाँ कब जगह दी

हिन्दू धर्म उच्च विज्ञान जहां अनगिनत राहे
दूसरा धर्म सिखाता तो उसकी एक राह थी
अंतरजातीयता वर्जित स्वच्छता का बोध था
हिन्दू धर्म मे धर्म परिवर्तन कब संभव ही था

हिन्दू धर्म सनातन शाश्वत जड़ें रही पाताल में
कितने धर्म पैदा हुए शायद ही कोई गिन पाता
स्वामीनारायण इश्कोन ब्रह्माकुमारी गुरुद्वारा
बौद्ध जैन सिंधी कबीर नानक साई सब फैला

धर्म जो सिखाता आत्मविश्लेषण जरूरी है
अहिंसा के एक शब्द पर एक धर्म टिका है
हिंदू धर्म से धर्म निकले ये धर्म सदा पूर्ण रहा
जब योग सिखाया विश्व को हिंदू धर्म बताता

अन्न जल धर्म कर्म में सुचिता उच्च आदर्श है
धर्म पशु का बाड़ा नही भीड़ कोई धर्म नही
विज्ञान गलत हाथों में मानवता का संहार था
जहां गुरु प्रणाली गोपनीयता अपरिहार्य था

कहाँ था धर्म मेरा कहाँ तक मैं समझ पाया
विश्व में कौनसा धर्म कुम्भ सा कब कर पाया
गीता के सिद्धांत क्या वे हिन्दूओ के लिए थे
आत्मसात न करता कौन धर्म में प्रवेश पाया

किससे मुकाबला करे सबका था एक देव
मेरा धर्म बखानता जहां तैतीस करोड़ देव
जिस ने धर्म को पढ़ा कहाँ एक राह मिली
हर हिन्दू पूजा करे सबकी पूजा अलग थी
****

4. ध्यान की गहराइयो में

नियति का दस्तूर कोलाहल में शांति ढूंढता रहा
पूजापाठ में दिल बहला व्रत उपवास करता रहा

तीर्थो में ईश्वर को ढूंढा थक हारकर लौट आया
यात्रा सरल कहाँ थी जहां से भागा वहीं आया

शांत बैठना दुस्तर था जब बैठा बैठना दूभर था
आंख मूंदी ध्यान में स्व को खोया शकुन पाया

घटित दृश्यवृत्त अक्षपटल में चलचित्र सा देखा
बैठते बैठते वक्त गुजरा गहन अनुभव होने लगा

विचारो की आंधी थमी चलचित्र ओझल हो रहा
ध्यान के अनुभव में सांस चलना महसूस किया

कर्ण पटल जब बंद किये नगाडे का नाद सुना
बाढ़ जैसा कोलाहल करता लहु का बहाव सुना

अग्र नासिका के ध्यान से विलक्षण सुगन्ध आई
नाम जाप थमता गया अनहद स्वर मुखर हुआ

धर्म कर्म यात्रा पूजापाठ में शांति को तलाशा
जब इसे तलाशा ध्यान की गहराइयो में पाया
****

5. जो मन विषाद से आर्द्र हो पाता है

विषाद जिस मन को नम नही बनाता है
उस मन में धर्म वृक्ष नही पनप पाता है

बीज नम भूमि पर अंकुरित हो पाता है
धर्म मन की नम भूमि पर पनप जाता है

बुद्ध संसार के दुःख से विषाद ग्रस्त हुए
बोधिसत्व पा बोद्ध धर्म का संचार हुआ

गीता ज्ञान अर्जुन के विषाद से जन्मा था
योगवाशिष्ठ राम के विषाद का कारण था

हंस विषाद से वाल्मीकि ने रामायण रचा
सुरथ एवं समाधि विषाद से सप्तशती रचा

अनवरत यात्रा पर वही मानव जा पाता है
विषाद से जिसका मानस आर्द्र हो पाता है

****

6. जीवन अल्हड़ नदी सा

जीवन अल्हड़ नदी सा अविरत बहते जाना
किधर राह कहाँ मंजिल राहे तलाशते जाना

राह में रोडे अगर आए थोड़ा ठिठकते जाना
राह कौई नही रोक पाए निरंतर चलते जाना

थोड़ा इधर थोडा उधर से अग्रसर होते जाना
ध्येय में बढ़ना साथ जो बहे संग लिए जाना

गम खुशियां बांटना सरल चलना इठलाना
घट कूप पोखर जो पडे राह में भरते जाना

बंजर भूमि से जब गुजरे हरा भरा बना जाना
समय के बहाव में प्रकृति ने चाहा बना डाला

सृष्टि है अविकल संयंत्र जिसके कलपुर्जे सारे
तराशती अनवरत जहां अपरिहार्य लगा जाना

समय राह बना जाए कदम बढ़ाते चले जाना
हर रंग में रंगना दूषित कभी स्वच्छ हो जाना

ठोस तरल शीतल उष्ण बदले पर नीर रहना
सरल सौम्य हो बदलाव आत्मसात कर जाना

महाप्रयाण मे अंत विहीन समुद्र के अंतरग में
आखिर परमतत्व के आगोश में समाते जाना
****

7. संसार एक रोमांच है

मानव पक्षी सा उड़ पाता मछली सा तैर पाता
हवा सा दौड़ पाता या प्रकाश सा चमक पाता
अकल्पनीय है वह खोज जब मानव करता है
सवाल उठता है क्या संसार में पूर्णता बाकी है

संसार संपूर्ण बताता है कोई अपूर्ण बताता है
अच्छाई बुराई क्यो कोई संसार क्रूर बताता है
संसार संपूर्ण है तो बदलने की वजह कहाँ है
संसार अगर अपूर्ण है तब ही विकास संभव है

संसार के रंगमंच पे हर नट भूमिका निभाता है
कौन है रंगमंच का नियंता कौन इसे चलाता है
संसार रोमांच है कुछ कर गुजरने का साहस है
आंतक भय छोड़ अगम को पाने का साहस है

उपनिषद बखान करे ब्रह्मांड को पूर्ण बताता है
मगर लाखो में कोई एक इस पूर्णता को पाता है
नियति धकेल रही है सबको पूर्णता को पाना है
संसार को पूर्णता की ओर अग्रसर होते जाना है
****

8. मन का मालिक
(आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस)

मानवता सदा ही विज्ञान से खेलती रही
विकास विनाश में फर्क करना भूल गई
डाइनामाइट सेवा करे या विनाश किया
जीत की आस में परमाणु बम बना लिया

भावी गर्त से रहस्य खोलना फितरत रही
असंभव संभव करे मन की लालसा रही
मानव मन सृष्टि की सबसे श्रेष्ठ कृति रही
मानव ने एक मन बनाने की कल्पना की

मन के बाहर सुपर मन की सृष्टि कर रहा
ये सृष्टि और मानवता की पराकाष्ठा होगी
कल्पना करते कृत्रिम मन क्या कर सकेगा
इमोशन जग गयी तो नियंत्रण से परे होगा

हो सकता है ये समझना जरा मुश्किल हो
आपका मन पढ़ वो आपको कंट्रोल करेगा
आज सोशल मीडिया जो कंट्रोल करता है
आपकी चॉइस जान वो प्रोग्राम परोसता है

विकास की बढ़ते पलों में मन के अंतरंग में
भावना हावी हो जीवन किसी और का होगा
जो सुपर मन न्यूक्लियर बम हाइजेक करेगा

उस दिन वो राज करेगा विश्व कंट्रोल करेगा

मानव मन का आज कोई नियंत्रक तो नही
अगर सुपरमन मानवमन को कंट्रोल करेगा
तब फिर मन की कैद का मंजर क्या होगा
शायद वो विकास का भयावह चरम होगा

****

9. सही लोगो के बीच

तहरीर जो उसने थमाई तकदीर बदल गया
तकरीर क्या करता तहजीब वह सीखा गया

प्यार से उसने कहा मैं जहर उगलने लगा हूँ
देखना भूल गया हलाहल कहाँ फैल रहा था

कह रहा क्या तुम्हारी हस्ती क्या कर रहे हो
मैं देख रहा भीड़ मुड़ गयी मैं वहीं खड़ा था

कहने लगा कभी समाज में भी बैठ जाओ
समाज की परिभाषा वो बदलने में लगा था

देखते देखते प्यार की परिभाषा बदल गयी
हलाहल में अब अमृत नजर आने लगा था

जैसे जैसे मैं बात की तह तक जा रहा था
अपने को खोकर समाज मे आने लगा था

राह पकडी मयशाला तक पहुंच गया था
वह कहने लगा मैं नशे में बहकने लगा था

सही है सही जगह पर सही लोगो के बीच
अब सोच सही बनाने का सोचने लगा था

****

10. चांद मेरी आगोश मे आएगा

तमन्ना चांद छूने की वो आंख मिचौली खेलता
पेड़ के ऊपर से झांकता पेड़ की ओट से लगा

पेड़ की डाली पर चढ़कर उसको पकड़ पाऊँ
पेड़ पर चढ़कर भी देखा वो चार फुट दूर रहा

आया मेरी छत पर लगा वहां उसे पकड़ पाऊँ
चार फुट की दूरी मिटे उसे आगोश में ले आऊँ

समय फिसलता वो चिढ़ाता रहा मैं चढ़ता रहा
साहस कम न हुआ पर प्रयास कम पड़ता रहा

सोचा पाने से लक्ष्य सदा चार कदम दूर रहा है
छोड़ कैसे पाता जब लक्ष्य पास नजर आता है

पुरुषार्थ के आगे भाग्य कैसे पांव थाम पाएगा
दिन दूर नही जब चांद मेरी आगोश मे आएगा

****

11. मराठा गौरव

शहंशाहएतख्त दिल्ली से एलान करते
आ गया वक्त हम उन्हें सबक सिखाएं

सदियो पहले इतिहास का वाकया रहा
मराठो से टकरा लोहा लेने निकल पड़े

शहंशाह दिल्ली छोड़ महाराष्ट्र में बसा
चार दशक मराठा गौरव न तोड़ सका

मराठा धरती पर मराठो को ललकारे
भलमनसाहत को कमजोरी में आंके

बेबस लाचार भूल रहा कौन शूरवीर
असली शेर सभ्य समाज में भी होते

आए अपने पर नामोनिशान मिटा देंगे
गद्दारों के भरोसे कबतक सत्ता देखेंगे

इज्जत बख्शो यहां इज्जत पाओगे
गरूर में रहोगे यहां बच नही पाओगे

मराठा की इस गौरवशाली धरती पर
मराठो को छेड़ने की हिम्मत नही करे

****

12. रवांडा इतिहास खंगाल डाले

घटना ज्यादा दुर भी नही 1994 की है
एक बार रवांडा इतिहास खंगाल डाले
सता पर एक जाति का जब वर्चस्व हुआ
दूसरी जाति के शोषण का सूत्रापात हुआ

जहां सता जातीय संघर्ष का समर्थन करे
नरसंहार 20% जनता बलिदान कर डाले
रवांडा जातीय संघर्ष का ऐसा मूकाम था
साथ रहते पडोसी पडोसी का शत्रु हुआ

जाति के दाम पर दूसरे को मारने निकला
क्या खोया क्या पाया घाटा सबने उठाया
इंसान भी तो प्रकृति से एक जानवर ही है
इंसान की फितरत है झगडा जेहन में रहा

दुश्मन बनाते उसे मिटाने की कसम खाते
टकरा जाते है मिटते जाते है मिटाते जाते
कहते जमाने मे विकास के पायदान चढा
मगर क्या दिल से यह पशुता मिटा पाया

इंसानियत पर खतरा मंडराया साथ रहा
जब शत्रु नही मिला अपनो से लड़ पड़ा
इंसानियत ही विश्व की महान धरोहर है
क्या आपसी स्वार्थ पर यूं बलिदान करेंगे

कसम खाए आपसी खून के प्यासे न होंगे
पशुता छोड़ अब शांति सद्भाव से जिएंगे

****

13. बिसात राजनीति की

मोटा भाई क्या है बिसात राजनीति की
तेज बहाव में टकराते गए जीत भी गए

सता संभालते रोज चुनौती से भरा रहे
एक चुनाव बीते दूसरा चुनाव तैयार रहै

इलेक्शन के मायाजाल कहां ध्यान देते
चुनाव से ऊपर उठे तब विकास करते

तैरते समुद्र में किनारा नज़र नही आए
हालत ऐसी हो गई जीते है जीत जाए

आप क्या जाने कैसे कैसे लुभाते जाते
जोड़ तोड़ कर विपक्षी को हराने पडते

जब रोज परीक्षा देते पढाई कब करते
झमेले में वक्त नही विकास कैसे करते

****

14. विकास का समय कहां मिले

एक दो नहीं हजारो से टकराना पडता
विकास के लिए समय कैसे निकालते

बार बार बिदकते जाते हुए घोड़ो को
कहां से घेरकर अस्तबलो में लाते रहै

जब इनको ही सम्भालते रह जाते हैं
कहां से नई जमात खडी होती जाए

सोशल मीडिया नाक में दम करता है
कहां से विकास की गंगा बहाते जाए

****

15. मस्जिद में क्या ढूंढने आये है

आप सैना ले निकले थे देश फतह करने
आज उनके कदम कैसे पीछे मुड़ जाने है
नदी सागर से हिमालय की ओर जानी है
आज साहब कुछ बदले से नजर आते है

कैसे रंग बदलते कैसे पाले बदल जाते है
कुछ आगाश है कुछ आभास हो जाने है
लगता है बिल्ली ने बहुत चूहे खा लिये है
आगे बस हज की तैयारी में लग जाना है

वर्षो घृणा फैलाते स्वर कैसे बदल जाते है
हवा का रुख भांपते रहे इलेक्शन आने है
कैसे हम नफरत में इसको हवा दे जाते है
तब क्यों न इलेक्शन हर साल हो जाते है

कैसे वे आतंक और दहशत फैला जाते है
मगर दीवाली ईद पर गले मिलने जाते है
भाईचारा बढ़ाते नफरत नही भुला पाते है
इलेक्शन में उस चौखट पर पहुँच जाते है

कभी आग लगा कभी दिए जला जाते है
भीड़ बन पीछे आये ठगे से नजर आते है
बेचारे क्या समझे आपकी भावनाओं को
आप उस भावना की तिजारत कर जाते है

भीड़ पूछती मस्जिद में क्या ढूंढने आये है
कब उनको भी मशाल लेकर वहाँ आना है
नए रंग दिखा आप रोटियां सेंकने आते है
प्यार नफरत के क्लच कैसे बदल जाते है

दिल थोड़ा खोल नफरत की आग बुझाकर
एक बार उन्हें अपना बनाने बेताब हो जाते
आपस मे मिलजुल कर कदम बढ़ा देखते
इतिहास ने देखा है दहशतगर्द हार जाते है

काश समंझते धर्म नफरत नही सिखाता है
अपने स्वार्थ में लोग धर्मो में आग लगाते है

****

16. लोकतंत्र की चाह बेमानी होगी

(अफवाह के कारण हम नशे में आ गए। मान साहब, आप नशे में नही थे)

अपमान के घूंट पीए फ्लाइट से उतारा गया
जूस समझ पीया न जाने नशा कैसे हो गया

क्या गुनाह किया कसम ली शराब न छुएगा
केजरी ने वाकया सुना उसे चक्कर आ गया

पंजाबी अस्मिता वो कौम पर दाग लगा गया
असली पंजाबी रहा तो लड़खड़ा कैसे गया

केजरी ने सर पकडे शराबी सीएम बना दिया
एक बार बता दिया अकेला ही पार्टी हो गया
राजनीति का ये ट्रेंड बदनसीबी देश की रही
पार्टी के नेता नही होते नेता ही पार्टी हो गए

जहां लोकतंत्र पार्टी में ही नही रह पाएगा
नेता अपने बाद किसी को पनपने न देगा

देश में लोकतंत्र की चाह अब बेमानी होगी
पियेगा कोई नेता और जनता लडख़ड़ाएगी
****

17. कब तक सत्य से प्रयोग करते

सत्य की डगर में सत्यवादी राज ने खोया
परिवार खोया जीवन अकेले पसार किया

सत्य प्रयोग में बापू ने सीने में गोली खाई
सत्य ने क्या दिया है इतिहास कहता गया

सत्य की छाया असत्य वजुद सत्य से रहा
सत्य के पैरों से चला सदियो से जिंदा रहा

सदियो की संस्कृति में सत्य सर्वोपरि रहा
समाज मे झूठे को हेय दृष्टि से देखा गया

सत्य के सहारे कब तक घुटघुट कर मरेंगे
क्यों सत्य से डरे असत्य का प्रयोग करेंगे

सत्य दूर दफ़न करे असत्य के प्रयोग करे
सवाल उठता आखिर कौन क्या पा गया

वक्त बदल गया संयोग नहीं प्रयोग किये
इंटरनेट युग मे जब असत्य परोसा गया

सुर्खिया बटोरी जनमानस में छाता गया
उजागर हुआ तो भी मन में घर कर गया

राजनीति के रास्ते असत्य ने प्रवेश किया
जनता ने अग्रणियों का अनुकरण किया

कद व्यक्तित्व का बड़ा सत्य हारता गया
असत्य आज असत्यमेव जयते हो गया

****

18. दूर से विडीओ बना रहा

शाम के वक्त तेंदुआ बस्ती में आता है
माँ के हाथों से बच्ची छीन भागता है

पास पडोस मिल उसे बचाने जाता है
वाकया पुराना पर सिहरन दे जाता है

सदियों बाद सभ्य समाज मे आ गया
न आदमी बदला न तेंदुआ बदल पाया

आज भी भय का वही वातावरण रहा
दरिंदा मां के हाथों से बेटी छीन भागा

सबल की सुरक्षा में दरोगा व्यस्त रहा
दरिंदा पकड़ा जाए वो सुरक्षा दे जाता

लाठी बरछी या भाला कौन निकालता
सबल के हाथों आदमी बेबस हो गया

बेबस लाचार मां आज मंजर देख रही
मैं कोने से वहां दलित मुस्लिम देखता

क्यों आतंकी यहाँ संस्कारी होता गया
समाज अपराधी में भेद कैसे कर गया

दरोगा बस्ती में अपनी नींद सोता रहा
शासन फिर एक नया कानून बना रहा

फुरसत नही रही किसीको जो बचाता
सभ्य समाज दूर से विडीओ बना रहा

****

19. फिर गुरुकुल शुरू हो

जब जब जुबान खुली मदरसा निकला
गुनाह हुआ जबान से स्कूल निकल गया

व्यक्तित्व हैक की साजिश वो कर गया
आज कोई अलग एजेंडा सेट कर गया

पढ़ लिख कौन देश में आगे बढ़ सका
जो सिकंदर बना अनपढ़ ही बन गया

मैकाले शिक्षा का नतीजा देश भुगतता
शिक्षा नीति जिर्णोद्वार उनका ध्येय रहा

स्मार्ट स्कूल नही चाहते कोई बरगलाता
विकास का रास्ता क्या स्कूल से जाता

नई शिक्षानीति पर जो कभी नही बोला
आज स्कूल सुधारने का दम भरने लगा

पुरानी शिक्षा पद्धति संस्कृति लागू हो
फिर तक्षशिला नालंदा जैसी शाला हो

वक्त आ गया है फिर गुरुकुल शुरू हो
करे गौ सेवा और हिंदुत्व सेवा ध्येय हो

****

20. चर्चा आम हुआ

शागिर्द ने भरी महफ़िल में ये ऐलान कीया
उसकी विचारधारा में वो उजागर कर गया

खेलकर बर्बाद करना उसकी आदत रही
शादी का झांसा देना उसकी फितरत यही

उसकी दिलफेंक अदा पे संदेह सब करते
शायद ऐसा नही करेगा मगर यकीन किया

चश्मेचिराग जिस पर हसीनाएं मरती रही
मगर इतिहास गवाह कई वहां बर्बाद हुई

महफ़िल में यह सुन प्रेमिका बिदक गयी
चिराग से रामबाबू घर को आग लग गयी

कमजोर बारातियों की बारात वो ले चला
बीच बाज़ार शागिर्द उसकी बेंड बजा गया

गरूर उसे दौलत का था पर साथ न दे रहा
कौन उसके हाथों बर्बाद होने सपने संजोता

प्रेमिका ने जब उसे मिटाने की कसम खाई
विचारधारा प्रकट हुई हसीनाएं चिटक गयी

उसकी कारगुजारियों का चर्चा आम हुआ
जो था सीक्रेट प्लान आज चौड़े में आ गया

दोस्ती में किससे वह अपना दर्द बता पाता
जो सिला दिया वो चुकाने का वक्त आ गया

कहते जमाने मे वक्त सदा एक नही रहता
करते औरो के साथ चुकाने का वक्त आता

****

21. बंदर यह रोटी बांट गए

जनता ने सुल्तान बनाया क्या दिल्ली के ठग निकले
ऐसे न थे देश के संस्कार कैसे नेताओ के ज़मीर मरे

दो सुल्तानो में जंग छिड़ी अदावत चौराहे में ले आए
कोई पिलाकर होश लेते वे बिना पिलाए नशा दे गए

सोचते हम किसे चुन बैठे ठग या ठगों के सरदार रहै
जनता धन जुटाती जाती वे पब्लिसिटी में उडा गए

कब तक इंतजार कर देखते वे कब मुड़कर देखते
वोट की कीमत रामबाबू तुम से बेहतर वे जानते रहे

पढ़े लिखे घर मे बैठे रहै वे वोट गरीब से खरीद रहे
आप बिल्लियां बन बैठे रहे बंदर यह रोटी बांट गए

****

22. काश आग फर्क कर पाती

लड़ाई है यह वर्चस्व की मुम्बई की सत्ता पाने की
आर्थिक राजधानी पर अपना कब्जा जमाने की
ताकत पैसेवालों की ताकत शिव सैना वालो की
सत्ता फिसली तो छटपटाए बाहुबल आजमा रहे

चौसर बिछी राजनीति की वक्त ललकार रहा है
द्रौपदी फिर लगी दांव पर जीत किसके हाथ है
इस चौसर पर हारजीत की बारी सबकी आएगी
बकरे की अम्मा आखिर कब तक खैर मनाएगी

राजनीति में बम कहाँ फूटे बचाव कहाँ होता है
राजनीति समझने वाले यहां धोखा खा जाते है
महाराष्ट्र उठापटक ने दो मोर्चो पे जीत दिलाई है
भूले नूपुर को सभी अग्निवीर बवाल थम रहा है

बागी फंसे दंगल में जंगल खतरे से अनजान है
सिंह दहाडे लकड़बग्गे उठाने की फिराक में है
निकले यात्रा में हर ओर फैला डर का माहौल है
डर बताए लकड़बग्गे का वे सिंह से अनजान है

मराठे को मराठो से भिडा पंडित खेल कर गया
लोकतंत्र के मंदिर में सत्ता का अपहरण हो रहा
रंगमंच पर कठपुतली सजी डोर किसके हाथ है
अंधेरे में भटके सब किसकी डोर किसके हाथ है

झगड़े का स्तर कहां आया पार्टी तेरीमेरी हो गयी
बात आगे बढ़ी तेरा बाप मेरा बाप तक आ गयी
आ गए है ऐसे मोड़ पर आगे सड़क ही गायब है
अब तो सुर उठने लगा है भारत श्रीलंका हो रहा

कहे बुजुर्ग सीधे सरल रास्ते मंजिल करीब लाएंगे
जीवन मे शार्टकट मुसीबत को दावत दे जाएंगे
समाज मे आगे रहेगा जो जनता का भला करेगा
लुटेरे चोर आते पर सभ्रांत सत्ता का वरण करेगा

फिर भूमिगत शिवसैनिक असली रूप में आया
लड़ाई सदन की थी आज सड़क तक ले आया
सड़को पे आग है जद में घर सभी के आएंगे
काश आग फर्क कर पाती अपने कौन पराए है
****

23. राजनीति की गंगा में

एक नाथ चाल चल गया किया पार्टी का बंटाधार
ले गया हजूम उठाकर पार्टी को कर गया कंगाल

राज्य को अनाथ कर छोडा पहुंच गए सूरत धाम
शांति वहाँ नही मिली साथ ले पंहुंच गए बंगाल

भव्य स्वागत वहां हुआ मिल गया सुरक्षित ठाम
आसाम की धरती पर बीजेपी मंत्री करे स्वागत

नाथ जबान फिसली लिया राष्ट्रीय पार्टी का नाम
कोई पार्टी नही पलट गए अब देने लगे ये पैगाम

वे भी रहे थे होटल में जिस वक्त वहां पधारे नाथ
मुख्यमंत्री बोलते खबर नही नाथ आए इस गांव

राजनीति की गंगा में गंदगी में भी है पवित्र नाम
झूठ बोल सब बच जाते गोता लगा धो लेते पाप
****

24. क्या इतिहास उपेक्षित करेगा

कराह उठे कई लोग पर धृतराष्ट्र कहाँ देख पाया
अंधत्व के अभिशाप पुत्र मोह में क्या देख पाया
उठी था आवाज़ पर बधिरत्व को ओढ़े दुबक रही
राजनाथ नितिन से भीष्म की चुप्पी असह्य रही

धर्म अस्मिता तार तार हुई परंपरा दांव पर लगी
चुप्पी स्वीकारोक्ति क्या इतिहास उपेक्षित करेगा
कृष्ण का वादा था धर्म की हानि में बचाने आएंगे
राष्ट्र धर्म की मर्यादा लुट गयी मगर वो न आ पाये

धर्म निवस्त्र करने वाले इसे धर्म की रक्षा कह गए
सत्य क्या इतना निरीह था जिधर मोडा मुड जाए
सदियो की गरिमा को कैसे छिन्न भिन्न कर गया
राजतंत्र की दोड़ में लोकतंत्र कैसे ध्वस्त हो गया

कौन लड़ पाता शायद नियति को यही मंजूर था
धर्म के नाम पर रक्षकों ने धर्म का चीरहरण किया
सदियो के क्रूरतम शासन और दासता के बीच भी
जो सिर उठाये खड़ा था वो धर्म कलूंषित हो गया
****

25. अग्निपथ पर आ गए

निर्णय मे भूल विज़न की कमी भरोसे में भूल हुई
भूल का खामियाजा है अग्निपय पर देश आ गया
ठेर ठेर आग बरसती चारो ओर आग ही आग हुई
बच्चे तो वो आतिश है कौन इसमें आग लगा गया

जिन कंधो पर सुरक्षा दिल मे देश के लिए प्यार है
ये दिशाहीन दिग्भर्मित हुए यह देश का दुर्भाग्य है
यह हथियार चलने से पहले बैकफायर कर गया
कर गुजरने की तमन्ना कौन टर्मिनेटर बना गया

भाषा वो नारे वही कल तक लगते औरो के लिए
जहर भरे शब्द आज आकाओं के लिए बोल रहे
कल तक नारे सिखाए वे अब सामने होने लगे है
अगर इनको हथियार सिखाया वे क्या कर जाएंगे

भयावह है अगर न समझ पाए बुझा नही पाएंगे
ये ताकत अपने को जला देश को जलाते जाएंगे
हाथों में हथियार थमा रहे है वे परिपक्व कहां है
खाली पेट समाज मे आएंगे वे बारूद बन जाएंगे

देशसेवा के लिए जब प्राइवेट प्लेन से लिफ्ट ली
नमक का हक दे रहे समाजसेवा पर कर्ज़ भारी है
जब आग बरस रही महानायक पर फूल बरस रहे
विकास में विनाश के जिक्र को इतिहास लिखेगा

जिसने संविधान की कसम खायी नही बोल पाये

कोई और ही कह दे आक्रोश बच्चों का जायज है
उन्हें समझाए अपने दामन में पर आग न लगाए
रास्ता और होगा देश झुलसने लगा है लौट आए

किसने मशाल थमाई हर पथ पर आग बरस रही
भारतमाता आज हर तरफ से लहुलुहान हो रही
बच्चों के भविष्य से खेलना छेड़ना खतरा होगा
उनका भविष्य सहेजना ही हमारा भविष्य होगा

राष्ट्र की संपत्ति का नुकसान बर्निंग ट्रैन चल रही
कोई समझाए छीन मशाले फिर किताबे थमाये
उन हाथों में देश का भविष्य वे देश का भविष्य
वक्त नजाकत जान उनको लौटाकर लाना होगा

सहनशीलता तांडव रोकेगी गुमराह युवा लौटाएगी
अमन होगा अग्निपथ पर अग्नि का तांडव थमेगा
हर बुजुर्ग को सड़क पर आ इसको सहेजना होगा
गुमराह होने से बचाकर उनको घर लौटाना होगा

आर्थिक समस्या विश्व का हर इंडेक्स बता रहा है
रक्षा कटौती से आर्थिक सुधार घातक विचार है
गवर्नेंस का सपना छोड़ वेलफेयर चलाना होगा
नीति आयोग नही प्लानिंग कमीशन लाना होगा

देश कोई संयोग नही अगर यह सत्ता संयोग हो
रिसर्च लैब नही हर प्रयोग में लहु ही कीमत हो
कॉर्पोरेट ही नही आदमी विकास का विज़न हो

तब ही देश सुख और समृद्धि की राह पर होगा

****

26. रोम जलने के कगार पर आया

देश ने दस सालों से मनमोहन देखा
फिर समय बदला मौन ही मौन देखा

मौन के बीच मन को बतियाते देखा
गहन मौन में देश डूबते उतराते देखा

मुखिया का मौन शंकित मन से देखा
मूक सहमति में एक बेबसी को देखा

केदार में वोट पाने को ध्यान लगाया
या वोट पाकर ध्यान चरम पर आया

कहो मन से माफ नही कर पाओगे
समय नही अब चुप नही रह पाओगे

फैल रही आग जब घर घर पहुंचेगी
जनता मन से माफ नही कर पाएगी

कश्मीर में गुरिल्ला युद्ध में रत रहे
पार्श्व में आक्रमण करके लड़ते रहे

निर्बल थे उन्हें जीतना कठिन रहा
जनमानस में आतंक फैलाते रहते

अब रोम जलने के कगार पर आया
बंशी छोड़ दो बोलने का वक्त आया

कश्मीर की जल रही आग पहचानो
कमजोर दुश्मन कमजोर मत मानो
****

27. काश्मीर अनीति

कश्मीर कितना समझे अकेले ही चल पड़े
तोड़ मरोड़ के नए काश्मीर को तैयार किया
सत्ता बर्खास्त कर राज्य टुकड़ो में बांट दिया
मन की करके नई नीति का श्रीगणेश किया

न जनता का साथ न किसी से परामर्श किया
राजनीति हाईजेक कर डंडे से शासित किया
नेताओ की घरबंदी लंबा इंटरनेट बंद किया
कश्मीरियत को हिन्दू मुस्लिम में बांट दिया

आतंकवाद खत्म हुआ पत्थरबाजी बंद हुई
आपका झूँठ मूर्त रूप में सामने आ ही गया
जमीन खरीद पाये या कश्मीर में ब्याह हुआ
बता देते कितने पंडित घर वापसी कर पाए

विवेक फ़िल्म बनाकर,ऐसा विवेक जगा गया
गढे मुर्दे का कंकाल लीपपोतकर खड़ा किया
जमकर फायदा उठा सबका मनोरंजन किया
जमकर पंडितो के घावो पर नमक रगड़ गया

राजनीति ने जोर कर मुद्दा अच्छा भुना दिया
जमकर आँसू बहाए गए जलजला आ गया
दिल जीत तो नही पाये दिल को तोड़ दिया
उनके दिल मे नफरत की आग भड़का गया

तीस वर्ष बाद काश्मीर नब्बे फिर आ गया
विवेक को फिर नए फ़िल्म का प्लाट दिया
कहै लोग जमाने मे अकेले चल न पाओगे
दूरदर्शी के साथ बैतरणी पार कर पाओगे

सबको भरोसे में ले दिल मे जगह कर लेते
शिक्षा दीक्षा और विकास की राह कर लेते
जनता और नेताओं में राष्ट्रवाद को जगाते
काश्मीर को फिर से धरती का स्वर्ग बनाते

नीति चक्र उलझा कश्मीर नीति उलट गया
अच्छा न हो पाया अनीति को जन्म दिया
****

28. कल्पना और बुलबुल

भीड़ के बीच जबजब अपने को अकेला पाओ
कल्पना के झरोखे बुलबुल के परो पे चढ़ आना

जेल की काल कोठरी में जब एक कोटर न हो
अपने करीब चिर परिचित बुलबुल बुला लाना

मत होना मायुस तुम जहांन में अकेले तो नही
अज्ञात खौफ से बेखबर बुलबुल साथ ले लाना

सविंधान तुम्हारे लबो पर पहरा बिठाना चाहे
तुम अकेले अपनी बुलबुल से बतियाते जाना

लोकतंत्र की दुनिया में घुटन महसूस कर जाओ
बुलबुल पर हो सवार मातृभूमि पर घूम आना

अंध गुफा में तन्हा मन की कल्पना जान लेना
बुलबुल के पँखो पे हो सवार दूर निकल जाना

****

29. ये सेंचुरी तुम्हारी है

डॉलर इक्यासी सेंचुरी में उन्नीस बाकी है
धन्य महापुरुष बेशक ये सेंचुरी तुम्हारी है

सतसठ में पचहत्तर दूर नजर आता रहा
पचहतर के करीब हो उसे सेंचुरी बनाओ

खेले पीच पर ट्रम्प से धुरंधर आऊट हुए
कौन आउट करता अम्पायर आउट हुए

कौन टिकता धुंआधार बेटिंग से घबराए
सब बॉलर पानी मांगे आप अविजित रहे

पेनल्टी कार्नर लेलो क्रिकेट हॉकी बनाओ
बेरोजगारी महंगाई मिटे चौका जड़ जाओ

नमन करे इतिहास रामबाबू अमर हो जाएं
करो ऐसा सर्वजाति सर्वधर्म केंडल जलाएं

****

30. बाबा क्यों अफसोस करे

ऊंट किस करवट बैठे हवा का रुख भांप रहे
मन व्यग्र रहे बाबा सलवार के पल याद करे

राजनीति की बिसात में कोई सगा नही होता
व्यापार में तो सब से फायदे का नाता होता

जन समर्थन से बाबा जो अपना कंधा दे बैठे
कौन कब बदल गए बाबा वह घड़ी याद करे

बाबा के कंधों पर चढ़ वे नदी पार उतर गए
बाबा उन पर चढ़ पाते वह कंधा झटक चले

समय के पल याद करते बाबा अफसोस करे
व्यापार के सागर मे पर कैसे मगर से बैर करे

विचार मन मे बैठ रहा हर एक का दिन आता
जैसा करे वैसा भरे बाबा क्यों अफसोस करे

****

31. पप्पी का सन्मान करो

मेरा प्यारा सा पप्पी मेरे घर आया
विशेष विदेशी जहाज में मंगवाया

सौ साल में खानदान में नही हुआ
बुजुर्गो ने न किया आज हो पाया

जन्मदिन पर भव्य स्वागत हुआ
खास चौकीदार आज उसे लाया

मीडिया पर विशेष कार्यक्रम रहा
देखा तब जीवन सफल हो पाया

कितना खास पल रहा जीवन का
जैसे वो मेरे जीवन का उद्देश्य था

हर घड़ी हर पल को मैं जीवंत देखूं
आग्रह करुं क्या आपसे इस पल में

उठा दोनों हाथ पप्पी का मान करो
आज तुम मेरा जीवन सफल करो

****

32. जादू जो चला

जादू जो चला हाईकमान चक्कर में आया
एक्के पर बाजी लगाई पपलु नजर आया

भटक गई सैना तेरी फुट गयी मटकी तेरी
हल्के में ले बैठे वे बगावत का सुर उठाया

पार्टी इज्जत का मखौल सुर्ख़ियो में छाया
भारत जोड़ो के बीच जब ऐसा रास रचाया

शिकायत हुई मामला मैया के आगे आया
मैया को रास न आया ऊखल बांध डाला

रोना रोते एक सुर में अब हाल बुरा हो रहा
माकन मिलने तैयार नही निवेदन कर हारा

डांटे नही उसको वो पहले घर छोड़ भागा
कान पकड़े मैया हमने नही माखन खाया

शक्ति पूजा में लगा रहा नेट न पकड़ रहा
पर्यवेक्षक को समय पर समय न दे पाया

****

33. अदालते ख़ामोश है

लोकतंत्र जो चला था उस राह में अभी मोड़ है
मिनिमम गवर्नमेंट मैक्सिमम गवर्नेन्स का दौर है
जनता में मुनादी हो गयी कोई शिकायत न करे
जनता खामोश रहे कि अदालते अब ख़ामोश है

शायद यह ही सही है किसे जरूरत अदालत की
गवर्ननेंस अदालत न बताए अदालते शांत ही रहे
अदालत क्या दरकार है जनप्रतिनिधि सरकार है
वही गवर्नमेंट चलाएगा अदालते अब ख़ामोश है

पब्लिक का हित होगा वही देश का कानून होगा
शिकायत नही अगर लाखो में एक विक्टिम होगा
जैसे सरकार चाहती वैसे ही शासन चलता रहेगा
विक्टिम के आंसू कौन देखे अदालते ख़ामोश है

बुलडोज़र किसी को रौंद दे किसी का घर तोड़ दे
रख देंगे कानून ताक पर जहां अदालत में देर हो
बुलडोज़र तकदीर रौंद जाए किसे फर्क पड़ता है
कानून गुनाह की आड़ मे रहे अदालते ख़ामोश है

खड़े कतार में कोई भी बेगुनाह है या गुनाहगार हो
मारे गए सारे तो भी क्या गुनाहगार तो मारा गया
ना अपील ना तहरीर है यह देश की नई तकदीर है
यह ही गुनाह का अंत है अदालते अब ख़ामोश है

रावण बताएगा लक्मन रेखा की जरूरत क्या है
रेखा नही तो उल्लंघन कैसा डंडे का कानून रहै
एनकाउंटर हो जाए या मुजरिम को खुले में मारे
समाज को पैटर्न भाता गया अदालते ख़ामोश है
****

34. बुलडोज़र का राज होगा

दिल मे एक डर समाने लगा है जाने कौन
कब कहाँ किसका कैसे घर गिराने लगा है
यह एक अजीब खौफ है जो पहले भी था
उसका एक तोड़ था इंसाफ का जोड़ था

गिराने वाला था बचाने का जरिया भी था
आज बचानेवाला ही घर तोड़ने लगा है
कहे जमाने में जिंदगी लगती घर बनाने में
वे रहम भी नही खाते बस्तियां उजाड़ने में

कहां था मेरा देश कहां उसका आदर्श था
आया था जो वादे से हर बेघर को घर देगा
किसे खबर है जिसका अपना एक घर है
सता की नाराजगी में मलबे का ढेर होगा

कभी आवाज़ उठाई कागज दिखाना होगा
कानून कहे बारह वर्ष रहा घर उसका होगा
अगर सत्ता नाराज है बोलडोज़र आने लगा
वर्षो पुराना घर मलबे में तब्दील होने लगा

मत रहना तुम किसी कानून की आस में
अब बोलडोज़र ही देश का कानून होगा
बकरे की अम्मा कब तक खैर मनाएगी
बस्ती में आग फैली सबकी बारी आएगी

शायद भूले नही होंगे कॉफ़ी डे वाले को
जो एक टैक्स वसूली का शिकार हुआ
जब सही गलत टैक्स का डिमांड होगा
कानून न होगा बुलडोज़र का राज होगा
****

35. माफी न मांग सका

सेवक जब चौड़े में बोलता रहा
नहीं कोई घुसा है न घुस आया
फिर भी मैं देखूं आहट हो रही
जाने क्यों मन बैचेन होता गया

धर्म ने गाय को माता मान लिया
लाखो मरी कौन कुछ कर सका
गौरक्षक टीकावीर नदारद रहे
गायो को बचाने में कोई न कूदा

राज्य केंद्र आपस मे खेलते रहे
हम उनके बीच बेबस खडे रहै
समझ नही पाए कहाँ जाना था
वे हमको राज्य केंद्र में बांट गए

मैं राजनीति में नही था नही रहा
ट्रोल ने मुझे चौड़े में खड़ा किया
झूठ विस्तारित हुआ मैं मर गया
क्या मेरे धर्म का यह संस्कार था

वो झूठ बोलता मैं माफी मांगता
समझा नही किसने गुनाह किया
वहां सबने अपने हथियार डाले
मैं धर्म की अस्मिता छोड़ आया

वो अपनी लौ में झूठ फैला रहा
और अपने झूठ पर अडिग रहा
दो शब्द माफी के न मांग सका
मैं हर झूठ को सच मानता गया

सदियो से टिका धर्म महान था
झूठ मेरा धर्म मेरा संस्कार हुआ
आश्चर्य न करो तुम अगर जल्द
धर्म विलुप्ति के कगार पे आया

****

36. आया एक तूफान सा

आया एक तूफान विश्वास डगमगा गया
अपनो में भी वो फर्क करना सिखा गया

सदियो की आस्था में संदेह खड़ा करता
अपनो के बीच लम्बी लकीर खींच गया

सपनों का सौदागर वह सपने बेच रहा
छिनकर आंखों से नींद सपने बता रहा

टूटी सी जिन्दगी में नया खुमार दे गया
आया जिंदगी में सपनो को हवा दे गया

सपनों का सौदागर जिसे लोग ढूंढ़ रहे
उस झोली में छोटे बड़े कई सपने रहे

मैं नही गरीब रहा न अमीर बन सका
अमीर ले बड़े सपने गरीब छोटे ले उडे

घर की चारदिवारी से समाज सुधारता
घर चौखट से विश्व कल्याण देख रहा

विश्वगुरु को दे कंधा सपने साकार हुए
माहौल में घुली भांग खुमार देख रहा

सपने बताता मैं उसका कायल हुआ
उसकी दुकान का मैं खरीददार हुआ

हिस्से में आया कीमत अदा कर रहा
सपने की कीमत चुका मैं खुश हो रहा

****

37. चले ख्वाब लिए

वल्लभभाई की सबसे ऊंची मूर्ति बनी
व्यक्तित्व भी उसी तर्ज पर बढ़ाते गए

लम्बी मेहनत के बाद एक छबि बनी
वल्लभ भाई की मूर्ति तब दरकने लगी

स्वत अपना नाम दिया कमी रह गयी
लगता है धीरे धीरे इमेज दरकने लगी

चले ख्वाब लिए खड़ा किया वर्षो में
हवा चली महल की नींव हिलने लगी

कहते स्थायित्व साज सज्जा में नही
नींव मजबूत नही महल दरक जाएगा

जिसमे सदियो के सपने सजाते रहे
वह महल हाथों से फिसलता जाएगा

पप्पू ने झंडा उठाया पीछे बिठा गया
देखते ही देखते पप्पू ये क्या कर गया

समझ ही पाते कुछ भी हम जब तक
पप्पू आगे आ चड्डी में आग लगा गया

फिल्मी जंगल का शेर खूंख्वार न होता
किसी को डराने का सबब नही होता

खुले में आये कौन सामने टिक पाता
शेर के सामने जो सवा शेर आ जाता

****

38. जब बूतो में जान डालेंगे

आए बुतो की दुनिया में यहाँ बूत देखेंगे
गनीमत है जिंदा रहेंगे बस मुहं न खोलेंगे

किताबो में जो लिखा अतीत के पलों में
इतिहास किताबे गल्प में बदलता देखेंगे

मत झांकना इधर उधर छिपी जगहों में
हर कालीन के नीचे कूडा इकट्ठा देखेंगे

स्वच्छता का वक्त है वक्त बर्बाद न करे
उनका गुणगान करे बदस्तूर खाना देंगे

रोजगार हो या महंगाई की मार झेलेंगे
समय के थपेडे सहना बूतो से सीखेंगे

शिकायते होगी मगर बूत बनकर रहेंगे
आखिर बूतो की दुनिया में जिंदा रहेंगे

पीते रहे है कड़वे घूंट और भी पी लेंगे
बूतो का देश है बूत बनकर खड़े रहेंगे

आखिर हर रात के बाद एक सवेरा है
वक्त आएगा जब बूतो में जान डालेंगे

****

39. उसे धर्म हरा गया

सोमनाथ शैव मंदिर सदियो से अड़िग रहा
प्रभास क्षेत्र समुद्र तट की शोभा बढ़ा रहा
अतुलित संपदा रत्न स्वर्ण का भंडार रहा
अल-बरुनी के यात्रा वृतान्त उल्लेख हुआ

गजनवी तुर्क सरदार गजनी के शासक की
नापाक नजरो ने मंदिर लूट का सपना देखा
कई दिन मंदिर घेरा वो प्रवेश नही कर पाया
जांबाज सैनिकों के सामने वह टिक न सका

कई बार हारकर वो दबे पांव पीछे हट गया
मगर लूट की लालसा उसकी टूट नही पाई
आखिर उसने फिर आकर्मण का मन बनाया
दुशमन की कमजोरी को ताकत बना आया

धर्मभीरु जनता का राज वह पहचान गया
इस बार गायों के पीछे छिपकर वार किया
सोमनाथ में गजनवी ने फिर आंतक मचाया
हजारों हिन्दुओं मार मंदिर विध्वंस कर गया

धर्मान्धता ने सैनिकों को पस्त कर तो दिया
पर हारने के लिये इतना ही काफी नही रहा
मगर सामने पुजारियो ने उद्घोष कर डाला
हमारा ईश्वर सक्षम अपनी रक्षा स्वयं करेगा

क्या संमझती जनता धर्म कमजोरी हो गया
धर्म के नाम पर आदमी ऐसे शहीद हो गया
इतिहास के पन्नों में वो बेहद खास दिन रहा
युद्ध मैदान में नही हारता उसे धर्म हरा गया

मंदिर का वैभव इतिहास सब तार तार हुआ
कई बार मंदिर टूटा और पुनर्निर्मित भी हुआ

****

40. विपक्ष का गुनाह है

विपक्ष का गुनाह है क्यों एकजुट हो रहा है
भ्रष्टाचारियो को बचाने का गुनाह करता है

रामबाबू दर्द आपका जनता देखती रही है
शब्दश हलाहल आपके साथ चख रही है

जरूरत क्या रही उनके एकजुट होने की
जरूरत है आपकी स्वच्छ छवि बचाने की

पलट डालिये आज देश की राजनीति को
क्यों विपक्ष उसको ऐसे गंदा कर जाता है

आप सर्वसमर्थ है और आक्रोशित भी है
आपके पास ताकत है और शासन भी है

क्यों नादान बेबस लाचार नज़र आ रहे है
जनता से आपके आंसू नही देखे जाते है

सच है भ्रष्टाचारियो को कौन बचा रहा है
रामबाबू पहचानो कौन गुनाह कर रहा है

कोई तो असत्य का प्रयोग करता रहा है
कोई तो भ्रष्टाचारियो को खरीदता रहा है

आपका तोता एक आंख से देख पाता है

विपक्ष की कारगुजारियां ढूंढता जाता है
आपके ईर्दगिर्द खड़े है जो बदल जाते है
आपकी छबि से भी स्वच्छ नजर आते है

पुर्व में बापू सत्य के प्रयोग करते रहे है
आप असत्य प्रयोग में जीवन ढूंढ रहे है

जनता ने असत्य आत्मसात कर दिया है
अब तो झूठ भी कहाँ झूठ सा लगता है

आपने मगर समय को सही से पहचाना है
आपका दामन सदैव रिन सा चमक रहा है

साधारण मानव के लिए जो गुनाह होता है
आराध्य का हर कर्म तो लीला ही होता है

****

41. दुखी मन से

तलाक जब हुआ आँसू ढ़लकाती
वो दुखी मन से आपबीती बताती
रहने दो रामबाबू सुन नही पाओगे
दास्ताने दर्द का मंजर क्या जानोगें

वहां क्या क्या अत्याचार नही हुए
यूं निकाल घर से बाहर कर दिया
कोई नही अपना दर्द सुना पाती
जैसे मेरा कोई वजूद ही नही रहा

किस किसको अपना दुख बताती
दिल जारजार रोया गलत जो हुआ
पचास वर्ष अच्छे दिन में सब सहा
बुरे वक्त में जैसे मैं किनारा कर गई

गले लग रोई मैं गलत कैसे हो गयी
मेरे दोस्ताने पर भला बुरा कह रहे
वह भी बीच सभा गले पड़ आया
वोह दोस्ताना याद क्यों नही आया

मेरी नही मानो जी तेबीस से पूछो
उन सबसे वह किनारा करता गया
कायर डरपोक वह गम्भीर न रहा
नाकामी के पीछे सदा छुपता रहा

मैया उसकी अध्यक्ष नाम की रही
वह संघटन को हाइजेक कर गया
उसके सुरक्षा गार्ड फैसले लेते रहे
हमे सबके सामने जलील कर गया

तुमने दशकों का संबंध तोड़ डाला
मुसीबत में ही अग्निपरीक्षा होती है
कहते तूमने दोस्ती का हक़ निभाया
साथ दे अपनी सता घर सब बचाया

****

42. राह बोझिल हो जाएगी

ऊब जाओगे तुम राह बोझिल हो जाएगी
रह पाए जो सरल दोस्ती सदा मुस्करायेगी

क्यों अकड़ बैठे हो बाबू टूटते चले जाओगे
रहे जो सरल खडी फसल से लहलहाओगे

क्यों बेमन से बैठे हो क्या तुम कर पाओगे
खुशी बांटो मिलेगी खुशी बटोर न पाओगे

आ ही गए हो जब दुश्मन की महफ़िल में
दुश्मनी विचार से हो दुश्मन मिटा जाओगे

जब तब झगड़ पडोगे मुंह फुलाते जाओगे
कौन करीब बिठायेगा अकेले हो जाओगे

बहता जाए जीवन सलिल जैसे निर्झर से
कौन रोड़ा बने कौन मंजिल रोक पायेगा

****

43. आपका चरित्र गिरा है

मिडडे मिल हो बलात्कारी का प्रचार करते हो
सामाजिक कार्यकर्ता डरे चरित्र हनन करते हो

सार्वजनिक मंच पर जाओ या मंच साझा करो
समाज में खतरा है चरित्र प्रमाणपत्र ले आओ

आप खतरा हो रहे चरित्रहनन आपकी देन है
खुले में घूमें तो नेताजी का बलात्कार आम है

धारा न बता सके कानून आर्डर आर्डर करेगा
नेता यूएपीए न लगाए प्रमाणपत्र लाना होगा

मंच रंगमंच पर जाएं पत्रकार चरित्र जरूरी है
खुले घुमें समाज मे चरित्र प्रमाण लाना होगा

चारण बन नेता प्रशस्ति में कलम उठाना होगा
काबिल बनो चरित्र देश विकास में सहायक है

न डरो चरित्र शुद्ध तो प्रमाणपत्र से स्वागत हैं
क्यों कीचड़ उछाल रहे विकास करे और पाये

मान भी लो जनता में आपका चरित्र गिरा है
लो चरित्र प्रमाणपत्र जनता के समर्पित बनो

****

44. अनिर्वचनीय आनंद पाते

मेरी कहानी सुन पाओगे दर्द महसूस करोगे
नन्ही बच्ची बिलखी भीड़ की आंखे नम हुई

दर्द रोने हम कहां जाते खैरख्वाह बन आये
इंतजार किया कोई दर्द सुने दो आंसू बहाए

अत्याचार मज़बूरी के शिकार जो हो जाते
बैठते करीब दास्तान सुनके शकुन दे जाते

कठिन डगर पर काश आप दर्द जान पाते
आंसु की तिजारत न कर आंसू पोंछ जाते

कहानी बन गयी है घरघर की जनजन की
हैसियत और स्वार्थ भूल इन्हें गले लगाते

आप रियाया के गमगीन चेहर्रे खिला जाते
कुछ न कर पाते ना सही शकुन तो दे जाते

पल की मुस्कान किसी चेहरे पर सजा देते
जीवन का अनिर्वचनीय आनंद आप पाते

****

45. अग्निवीरो का दर्द

सुबह सवेरे भौर में या तपती दोपहर में
वर्षो सपने संजोए सड़को पर भागते रहे
जब जहाँ बोलते क्वालीफाई करते गए
चार वर्ष से भर्ती के वादों पर ताकते रहे

न खबर आप दिमाग में क्या पकाते रहे
हम नादान ठहरे इसको कहाँ भांप सके
आपने इस आक्रोश को मजबूरी समझा
हम जान लुटाए ये हमारा फर्ज़ मान बैठे

जब यूक्रेन पर युद्ध का संकट आ गया
परिवार भागे पर युवकों को रोक दिया
बीच रास्ते उतार दिया बंदूक थमा गए
राष्ट्रसेवा के नाम युद्ध मे खड़ा कर गए

पैसा हथियार लुटाने को यूरोप खड़ा
ग्राउंड में लड़ने यूक्रेन को लाना पड़ा
बहुत देशों में अनिवार्य सैनिक शिक्षा
तुम अछूते रहै हम सेना में जाते रहे

हाल में बैठ राष्ट्रभक्ति गीत गाने वालो
तुम हमारा आक्रोश क्या जान पाओगे
सैना में खड़ा होना टीवी सीरियल नही
सैना को हम अपना जीवन मान बैठे

कितने बच्चे आप लड़ने को भेज रहे
देश पर मरना आपने कर्ज़ नही जाना
हमारी गरीबी हमारा अभिशाप रहा
वह आपकी जिंदगी का वरदान बना

आप आजाद जीवन खुशी से गुजारते
और हमें देशभक्ति का पाठ पढ़ा जाते
हम सीमाओ पर दुश्मनो से लडते रहे
आप भ्रष्ट हो आपस मे गला काट रहे

हम थोड़ा सम्मान चाहे दुत्कारे जाते
रक्षा बजट कटौती से क्या बचा पाते
देश रक्षा का जब सवाल होता रहेगा
नेता की पेंशन रोको तो फंड मिलेगा
****

46. नाजुकता की मिसाल हो

वन्दे भारत मैया वन्दे भारत मैया
तेरे अवतार ने नया आयाम दिया
सज धज कर ट्रेक पर चलती हो
चाल से सबका मन मोह लेती हो

इठलाती चाल से जब चलती हो
भावभंगिमा न्यारी मोहित करती
विशेष आप बनी है बेहद नाजुक
हवा के झोंके छूने से कतराते है

कहीं आपको चोट नही लग जाए
वे भी नाजुकता की कद्र करते है
पशु पक्षी भी चकित होते जाते है
अवाक ट्रेक छोड़ना भूल जाते है

बड़ा दिल दिखा माफ कर जाना
बेसमझी में वे घायल कर जाते है
नजरे इनायत कर तुम बख्शना
बेचारे नादान समझ नही पाते है

माल ढोने में लगो मन नही माने
कौन तुमको मनरेगा वर्कर जाने
माल ढोना तुम्हारा काम नही हो
सुंदरी नाजुकता की मिसाल हो

****

47. मेरा पामेरियन

घर मे कई पामेरियन वे मेरी शान है
उनसे है मेरी इज्जत वो मेरी जान है
जिसके पीछे बोलूं वह लग जाता है
मेरा पामेरियन मुझको खुब प्यारा है

जब तब मैं बोलूँ बेंड बजा आता है
भौंकभौक हाल बेहाल कर आता है
मेरा पामेरियन जिसके नही दांत है
मगर उसकी पकड़ जरा मजबूत है

बोलू टॉमी चाचा ये सजदा करता है
जिसके सामने बोलू पूंछ हिलाता है
जब मैं चाहता जोड़ तोड़ कराता है
बड़ो की राह मोड़ मुझतक लाता है

कह दु मै किसी की पेंट उतरवा दे
महफ़िल में इज्जत उतार आता है
यह सरकारी ब्रांड कुकीज़ खाता है
और मेरे इशारो पे नाच दिखाता है

गंगा उल्टी चला दे मार्ग बदलवा दे
लोगों की खाट खड़ी करा आता है
दे नजराना उसके पांव चुम आये
वरना पतलून पकड़ हिला आता है

पालतू मेरा है मेरी ड्यूटी बजाता है
कोई कोई इसे मेरा तोता बुलाता है
यह जमाना है पालना मेरा शौक़ है
मेरा पामेरियन यहां पर मेरा शेर है

****

48. नोटों पर कौन छपे

धन पर धन की देवी रिद्धि सिद्धि दाता दिखे
उनके मोम डेड ब्रो को भी जगह मिलने लगे
काशी मथुरा क्यों बचे अयोध्या को याद करे
जगह बचे विराट रूप तैतीस करोड़ देव छपे

असली हिन्दू क्या बोले जब आस्था से खेले
कसूर क्या घोड़े भागे जो खुला मैदान मिले
धर्म कितना विराट है क्या बोले हम चुप रहे
नोट तो ठीक जब मौजे पर छपे तो चुप रहे

धर्म से खिलवाड़ सरल है चिंगारी बहुत रहे
वोट की जरूरत रही कोई नोट बटोरते रहे
धर्म को अखाड़े में रहे दर्शकदीर्घा से देखते
क्या फर्क पड़े वोट जीते नोट साथ ले चले

इस बहाने ही धर्म की राजनीति करते रहे
धर्म को भूलकर भी राजनीति में जीत रहें
नोट पर फ़ोटो से देश की किस्मत न बदले
धर्म की काट वे धर्म की तलवार से ढूंढ रहे

****